OUKA
The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	भोलाराम का जीव-नाट्य रूपांतरण
Author(s)	Singh, Prakash Ved
Citation	外国語教育のフロンティア. 2023, 6, p. 211-218
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/91040
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

भोलाराम का जीव-नाट्य रूपांतरण

Singh Ved Prakash

Abstract

Bholaram ka jeev

In this article the writer has dramatized a short story for Osaka University students. This play was also performed by them in the year 2019-20. This short story is written by Harishankar Parsai (1922-1995). This is a satire of Indian office working system and its problems. In this play a person died while waiting for his pension. After death in Hindu religion there are so many different things followed by their family and other world persons as well. Like the god of death and his collogues write every person's entry to this new word after their death. They are waiting for Bholarams' soul in their office. After waiting so many days they are clueless about Bholarams' soul or called Jeev in Hindi. This is an unprecedented situation in their world. After getting help from other god they finally saw Bholarams' soul. In this comedy the problem of a poor person and a cruel system is highlighted.

Keywords: Dramatization, short story, satire, god, office system

पहला दृश्य ---------- (भोलाराम का घर, भोलाराम की पत्नी खाना बना रही है।)

भोलाराम की पत्नी -- आप किस चिंता में डूबे हैं?
भोलाराम -- सोच रहा हूँ कि नौकरी करते हुए तो घर का खर्च पूरा नहीं हो पाता है। कल से जब रिटायर हो जाऊँगा तो पेंशन पर घर कैसे चलेगा?
भोलाराम की पत्नी -- हाँ, यह चिंता तो मुझे भी खाए जा रही है। अभी बेटी की शादी भी करनी है। सुना है पेंशन के लिए भी सरकारी दफ्तर के बहुत चक्कर लगाने पड़ते हैं। वहाँ रिश्वत भी देनी पड़ती है। बिना रिश्वत दिए वे लोग अपने सगे भाई का भी काम नहीं करते हैं।
भोलाराम - सुना तो मैंने भी यही है। दफ्तर के कई पुराने साथियों को अभी तक पेंशन नहीं मिली है। हमारी हालत तो ऐसी नहीं है कि किसी को रिश्वत दें। रिश्वत के लिए पैसे होंगे तब ही तो देंगे।
भोलाराम की बेटी -- बाबूजी अपनी ही पेंशन लेने के लिए क्यों रिश्वत देनी पड़ती है?
भोलाराम -- बेटी, पेंशन दफ्तर में बैठे लोगों को लगता है कि हम लोग पेंशन नहीं भीख माँगने वाले हैं।
भोलाराम की बेटी - बाबूजी तो क्या आपको बिना रिश्वत के कभी पेंशन नहीं मिलेगी?
भोलाराम– नहीं बेटी, हो सकता है मुझे कोई ईमानदार आदमी मिल जाए और बिना रिश्वत के मुझे पेंशन मिल जाए।
भोलाराम की पत्नी -- आप अभी से इतनी क्यों चिंता कर रहे हैं। अगले महीने जब पेंशन दफ्तर जाइएगा तब उसकी चिंता कीजिएगा। कल आप अपने रिटायरमेंट के कार्यक्रम में बड़े साहब से पेंशन जल्दी शुरू करवाने की भी बात कीजिएगा। वे जरूर कुछ मदद करेंगे।
भोलाराम - नहीं, वे लोग भी कुछ नहीं कर सकते हैं। अगर ऐसा कर सकते तो हमारे पुराने साथी अभी तक क्यों भटक रहे होते! वे मदद की बात जरूर कर सकते हैं, लेकिन मदद नहीं कर सकते हैं।
भोलाराम की पत्नी -- कोई बात नहीं। आप आराम से खाना खाइए। भगवान चाहेंगे तो सब ठीक हो जाएगा।
भोलाराम -- हाँ, अब तो यही लगता है भगवान चाहेंगे तब ही कुछ ठीक होगा।

(दूसरा दृश्य--------- भोलाराम के सेवानिवृत्त होने पर दफ्तर में समारोह)

मंच संचालक - दोस्तो, आज हम लोग भोलाराम जी के रिटायर होने के उपलक्ष्य में यहाँ इकट्ठे हुए हैं। आज इस कार्यक्रम को यादगार बनाने के लिए हम लोग मिलकर भोलाराम जी के बारे में कुछ बातें करेंगे। कार्यक्रम के अंत में इस दिन को यादगार बनाने के लिए हमने नाच-गाने का भी बंदोबस्त किया है। हम लोग भोलाराम जी की पैंतीस साल लम्बी नौकरी की पारी खत्म करने का जश्न भी मनाएँगे। सबसे पहले मैं भोलाराम के साथी कर्मचारी रघुनाथ से भोलाराम जी के बारे में दो शब्द बोलने के लिए आग्रह करता हूँ।

रघुनाथ -- आज हम लोगों के पुराने साथी भोलाराम जी की नौकरी का आखिरी दिन है। हम लोगों के साथ-साथ इस दफ्तर में आने वाले सभी लोगों के साथ भोलाराम जी का व्यवहार बहुत विनम्र रहा है। वे इस दफ्तर में आने वाले सभी लोगों का काम अपना काम समझकर करते रहे हैं। एक बार की बात है, हमारे दफ्तर में एक बूढ़ा आदमी किसी काम से आया। काम हो जाने पर जब वह जाने लगा तो भोलाराम जी ने उससे पूछा कि आप इतनी दूर हमारे दफ्तर में कैसे आए हैं और कैसे अपने घर जाएँगे? उस बूढ़े आदमी ने कहा कि मेरे पास पैसे नहीं थे इसलिए मैं पैदल ही यहाँ तक आया हूँ। यह सुनकर भोलाराम जी ने उसे कुछ पैसे दिए और कहा कि आप बस से घर चले जाइएगा। मुझे मालूम है कि भोलाराम जी की आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहती है। फिर भी उन्होंने उस बूढ़े की मदद की। काश सभी दफ्तरों में भोलाराम जी जैसे कर्मचारी हों। हम लोग आज उनके रिटायर होने के अवसर पर उनकी लम्बी आयु की भगवान से कामना करते हैं।

मंच संचालक - भोलाराम जी सच में एक अच्छे कर्मचारी ही नहीं एक अच्छे इन्सान भी हैं। अब मैं उनके दूसरे साथी श्याम नाथ को भोलाराम जी के बारे में दो शब्द बोलने के लिए मंच पर आमंत्रित करता हूँ।

श्यामनाथ -- मेरे साथी भोलाराम जी ने इस दफ्तर में पैंतीस साल बिताए। उन्होंने अपना काम बहुत ईमानदारी से किया। कल से इस दफ्तर में हमें उनकी कमी महसूस होगी। मेरे साथ भोलाराम जी का लम्बा साथ रहा। मुझे दफ्तर में आए बीस साल हो गए हैं। भोलाराम जी हमेशा अपने काम के साथ मेरे काम में भी मेरी मदद करते थे। जब भी मुझे कोई जरूरत पड़ती तो वे बड़े भाई की तरह मेरे साथ खड़े रहे। बीस साल की नौकरी में मैंने भोलाराम जी को दो काम कभी नहीं करते देखा। पहला काम तो यह है कि उन्होंने कभी रिश्वत नहीं ली। दूसरा काम यह है कि उन्होंने कभी छुट्टी भी नहीं ली। ऐसे लोग मैंने कम ही देखे हैं। काश सभी दफ्तरों में भोलाराम जी जैसे ईमानदार लोग हों। मैं चाहूँगा कि उनकी पेंशन जल्दी शुरू हो और बेटी की अच्छे घर में शादी हो।

मंच संचालक - भोलाराम जी के बारे में यह बात तो मैंने भी देखी कि सर्दी-गर्मी-बरसात किसी भी मौसम में भोलाराम जी ने कभी दफ्तर से छुट्टी नहीं ली। अब मैं डिप्टी साहब से अनुरोध करूँगा कि वे भोलाराम जी के बारे में दो शब्द कहें।

डिप्टी साहब -- भोलाराम आज रिटायर हो रहे हैं। वे एक बहुत अच्छे चपरासी थे। वे हमेशा हमारे काम में मदद करते थे। अब हम लोग उनके जैसा ईमानदार चपरासी शायद नहीं खोज पाएँगे। इतनी कम तनखाह के बावजूद कभी रिश्वत का नाम नहीं लिया। दूसरे दफ्तरों के न जाने कितने चपरासी धोखाधड़ी से भोलाराम से ज्यादा पैसे कमाते हैं। लेकिन भोलाराम जैसे ईमानदार कर्मचारी सच में इस समय कम हैं। मैं उनकी पेंशन जल्दी शुरू करवाने में मदद करूँगा।

मंच संचालक - धन्यवाद डिप्टी साहब। आपने बिलकुल ठीक कहा। हमारे समय में भोलाराम जी जैसे ईमानदार कर्मचारी सच में बहुत कम हैं। अंत में अब मैं बड़े साहब को भोलाराम जी के बारे में कुछ शब्द बोलने के लिए मंच पर आमंत्रित करना चाहता हूँ।

बड़े साहब -- आज हमारे परिवार का एक पुराना साथी रिटायर हो रहा है। मैं इस दफ्तर को अपना परिवार ही मानता हूँ। ऐसे अच्छे चपरासी आजकल के समय में बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। वे साठ साल के होकर

भी बूढ़े और थके हुए नहीं लगते हैं। इस दफ्तर में उन्होंने लम्बा समय बिताया। मैं उनकी लम्बी आयु की कामना करता हूँ। यदि भोलाराम को कभी कोई जरूरत हो तो मुझे जरूर बताएँ।

मंच संचालक - हम सब लोग भोलाराम जी की लम्बी आयु की कामना करते हैं। अब इस कार्यक्रम के अंत में भोलाराम जी को मंच पर आमंत्रित करना चाहता हूँ।

भोलाराम -- आप सभी का बहुत शुक्रिया। कल से दफ्तर न आने की बात सोचकर दुःख हो रहा है। काम नहीं करूँगा तो क्या करूँगा? अब आगे आप लोगों के बिना जिन्दगी बिल्कुल खाली लगेगी। कोशिश करूँगा कि परिवार के साथ खूब अच्छे से समय बिताऊँ। आप सभी का बहुत शुक्रिया।

मंच संचालक - अब इस कार्यक्रम को रंगारंग बनाने के लिए हमने इस शहर की प्रसिद्ध डांसरों को बुलाया है। हालाँकि भोलाराम जी ने मुझसे यह सब नहीं करने का अनुरोध किया था लेकिन बड़े साहब की इच्छा है कि भोलाराम जी की विदाई का प्रोग्राम यादगार होना चाहिए। तो अब मैं करिश्मा और करीना को मंच पर बुलाना चाहता हूँ।

[किसी नए या पुराने गाने पर ४-५ मिनट का डांस]

तीसरा दृश्य ------ (पेंशन का दफ्तर, कई लोग कुर्सियों पर बैठे अपना काम कर रहे हैं।)

चपरासी -- अरे बाबा, आप पाँच साल से इस दफ्तर के चक्कर लगा रहे हो। लेकिन अभी भी आपको समझ नहीं आया कि बिना चढ़ावे के यहाँ आपका क्या किसी का कोई काम नहीं होगा।

भोलाराम -- बेटा, मैं भी तेरी तरह एक दफ्तर में चपरासी था लेकिन कभी रिश्वत नहीं मांगी।

चपरासी --- बाबा, रिश्वत नहीं माँगी शायद इसीलिए पेंशन दफ्तर के पाँच साल से चक्कर लगा रहे हो। अगर रिश्वत ली होती तो आराम से जिन्दगी बिता रहे होते। यूँ इतने कम पैसे के लिए हमारे दफ्तर का समय नहीं ख़राब कर रहे होते।

भोलाराम- रिश्वत लेने और देने में मेरा विश्वास नहीं है।

चपरासी -- बाबा, रिश्वत नहीं चढ़ावा कहिये। यह भी एक मन्दिर ही है। बिना पैसे दिए तो भगवान् भी खुश नहीं होते हैं। हम तो इन्सान ही हैं। फिर हम कैसे भगवान के नियम को बदल सकते हैं।

भोलराम -- मैं बड़े साहब के पास जाकर अपनी पेंशन की फाइल के बारे में पूछता हूँ।

चपरासी -- चले जाइये लेकिन कोई काम नहीं होगा।

भोलाराम -- क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?

बड़े साहब -- हाँ-हाँ क्यों नहीं। अरे भोलाराम तुम फिर आ गए? मैंने बताया था न कि पेंशन की फाइल आने में समय लगता है।

भोलाराम -- साहब कितना समय लगता है? पाँच साल आपके दफ्तर के चक्कर लगाते हुए हो गए। और कितना समय लगेगा?

बड़े साहब -- भोलाराम तुम अपने नाम की तरह ही भोले हो। तुम्हें मैंने और मेरे चपरासी ने भी कितने बार बताया कि यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी चढ़ावा देना पड़ता है। फाइल पर बिना कुछ वजन रखे वह आगे कैसे जा सकती है?

भोलाराम -- साहब मैं भी एक सरकारी कर्मचारी था लेकिन कभी रिश्वत नहीं ली। फिर मेरे पास आपको देने के लिए पैसे भी नहीं हैं। पैसे होते तो सबसे पहले मैं अपनी बेटी की शादी करता। मेरी गरीबी और बुढ़ापे पर कुछ तो तरस खाओ।
बड़े साहब -- यही बात तुम पिछले पाँच साल से बोल रहे हो। सिर्फ अपनी बात बोल रहे हो। हमारी मजबूरी तुम समझ नहीं रहे हो। एक बार रिश्वत लेने के बाद बिना रिश्वत के जिन्दा रह पाना असंभव होता है। लेकिन तुमने कभी रिश्वत ली होती तो तुम हमारा दुःख समझ पाते। अब तुम घर जाओ अगली बार आना तो कुछ चढ़ावा लेकर आना।

चौथा दृश्य–(धर्मराज, चित्रगुप्त से बात कर रहे हैं।)

धर्मराज–ऐसा कैसे हो सकता है? यह मेरे लाखों सालों के जीवन में पहली बार हो रहा है। किसी इंसान के मरने के बाद उसका जीव अभी तक यमलोक में क्यों नहीं आया?
चित्रगुप्त–महाराज, मेरे लिए भी यह आश्चर्य की बात है। आपके दफ्तर में लाखों साल काम करते हो गए। ऐसा पहली बार हुआ है। मैंने तो सारे रजिस्टर दो-चार बार नहीं दस बार देख लिए हैं। आखिर भोलाराम के मरने के बाद उसका जीव गया कहाँ?
धर्मराज–वह यमदूत भी पाँच दिनों से ग़ायब है। क्या भोलाराम की आत्मा के साथ वह भी कहीं लापता हो गया?
चित्रगुप्त–महाराज देखिये, वह यमदूत आ रहा है। भोलाराम के जीव के बारे में वही सारी बातें ठीक-ठीक बताएगा।
यमदूत–महाराज की जय हो।
धर्मराज–अरे यमदूत, तू पाँच दिन से कहाँ ग़ायब था? अब तक भोलाराम का जीव भी नहीं आया? भोलाराम का जीव कहाँ चला गया? इतनी बड़ी गलती तुझसे कैसे हो गई?
यमदूत–महाराज, जब से दुनिया बनी है, तब से मैं यह काम कर रहा हूँ। आज तक मुझे ऐसा धोखा नहीं हुआ। ऐसा पहली बार हुआ कि किसी इंसान का जीव मुझे चकमा देकर न जाने कहाँ चम्पत हो गया। मैंने तो सारा ब्रह्माण्ड खोज डाला। लेकिन भोलाराम का जीव कहीं नहीं मिला।
धर्मराज-अरे मूर्ख, इतने साल तुझे काम करते-करते हो गए लेकिन एक बूढ़ा आदमी तुझे चकमा देकर कैसे भाग गया?
यमदूत-महाराज, मेरे इन अनुभवी हाथों से तो अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट कर भाग पाए। लेकिन इस बार तो जैसे कोई इंद्रजाल ही हो गया।

धर्मराज-तूने ज़रूर कुछ भूल की होगी।
यमदूत-नहीं महाराज, मैंने भोलाराम के जीव को बड़े जोर से पकड़ा हुआ था। उसे लेकर जैसे ही मैं यहाँ आने के लिए वायु-तरंग पर सवार हुआ वह मेरा हाथ छुड़ाकर न जाने कहाँ ग़ायब हो गया।
चित्रगुप्त-महाराज, आजकल पृथ्वीलोक पर ऐसा बहुत होने लगा है। लोग और उनका सामान रास्ते से ग़ायब हो जाता है। कई बार तो एक पार्टी के नेता को दूसरी पार्टी वाले ग़ायब करवा देते हैं। कहीं भोलाराम का जीव भी तो किसी ने ग़ायब नहीं करवा दिया है?

धर्मराज-कैसी अजीब बात करते हो! लगता है तुम्हारी रिटायर होने की उम्र आ गई है। भोलाराम जैसे मामूली इंसान की आत्मा का कोई क्या करेगा?
यमदूत-महाराज यही तो मुझे भी आश्चर्य हो रहा है कि भोलाराम का जीव गया तो गया कहाँ? मैंने तो पूरा पृथ्वीलोक खोज मारा।
धर्मराज–अब कुछ भी करो, उस जीव का पता लगाओ। अगर भोलाराम का जीव नहीं मिला तो और लोग भी ऐसा करना शुरू कर देंगे और फिर पाप-पुण्य का डर लोग भूल जाएँगे।
चित्रगुप्त–महाराज, सामने से नारद जी आते दिखाई दे रहे हैं। वे इस संकट में हमारी मदद ज़रूर करेंगे।
नारद–नारायण, नारायण। क्या हुआ धर्मराज जी? आप सब इतना परेशान क्यों दिख रहे हैं? यमलोक में कौन-सी आफत आ गई? क्या नरक में घरों की समस्या खत्म नहीं हुई अभी तक?
धर्मराज–ऋषिवर, यमलोक में इतनी बड़ी परेशानी कभी नहीं आई। नरक में घरों की कमी तो कब की पूरी हो गई। आजकल नरक में इतने भ्रष्ट इंजीनियर और ठेकेदार आने लगे हैं कि उन्होंने बहुत कम समय में बड़े घटिया घर बनवाकर सभी नए नरकवासियों को घर उपलब्ध करवा दिये हैं।
नारद–तो महाराज अब कौन-सी बड़ी समस्या आ गई है? मुझे भी तो बताइए।
धर्मराज–ऋषिवर, अब आप ही हमें इस संकट से बचा सकते हैं। हुआ यह है कि भोलाराम नाम का एक आदमी पाँच दिन पहले मृत्यु को प्राप्त हुआ था। लेकिन उसका जीव न जाने कैसे यमदूत को धोखा देकर कहीं भाग गया। हम लोगों का पाँच दिनों से बुरा हाल है। आप ही कुछ कीजिए।
नारद–महाराज उस पर इनकम टैक्स तो बकाया नहीं था?
चित्रगुप्त–अरे उसकी इनकम होती तो इनकम टैक्स होता न? वह तो बेचारा भुखमरा था।
नारद–यह तो बड़ी दिलचस्प बात मालूम पड़ रही है। पृथ्वीलोक पर जाकर मैं कुछ खोजबीन करता हूँ।
यमदूत–नारद जी, वह पृथ्वीलोक पर भारत नामक देश के मध्यप्रदेश नामक राज्य के जबलपुर जिले के धमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक टूटे-फूटे घर में रहता था। परिजनों के रोने की आवाज़ उस घर से आ रही होगी। इसलिए आपको घर खोजने में मुश्किल नहीं होगी।
नारद–ठीक है, मैं पृथ्वीलोक के लिए निकलता हूँ। नारायण, नारायण।

पाँचवाँ दृश्य–(भोलाराम का घर, घर में बीवी और बच्चों के रोने की आवाज़ आ रही है। दरवाजे पर नारद आते हैं।)

नारद –नारायण, नारायण। घर में कोई है क्या?
भोलाराम की बेटी -आगे जाइए महाराज, हमारे पास आपको देने के लिए कुछ भी नहीं है।
नारद –बेटी, मैं भिक्षा नहीं माँग रहा हूँ। अपनी माता जी को बाहर भेजो। उनसे कुछ बात करनी है।
भोलाराम की बेटी -माता जी का रो-रोकर बुरा हाल है। पाँच दिन पहले ही मेरे पिताजी का देहांत हुआ है। मेरी माताजी से आपको क्या काम है?
नारद -बेटी, मुझे तुम्हारी माताजी से तुम्हारे पिताजी के बारे में कुछ बात करनी है।
भोलाराम की बेटी -ठीक है। आप यहीं रुकें। मैं अभी उनको बुलाकर लाती हूँ।
नारद -ठीक है बेटी।
भोलाराम की पत्नी–प्रणाम साधु महाराज, मुझ गरीब के घर खाने के लिए दाने भी नहीं हैं। पाँच दिन पहले

मेरे पति का स्वर्गवास हो गया। आपकी मैं क्या सेवा कर सकती हूँ? मेरे पति के बारे में आप क्या बात करना चाहते हैं?

नारद –माता, मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे तुम्हारे पति भोलाराम के बारे में कुछ पूछना है। यह बताओ कि भोलाराम को क्या बीमारी थी?

भोलाराम की पत्नी –साधु महाराज, उन्हें गरीबी की बीमारी थी। नौकरी से रिटायर हुए पाँच साल हो गए लेकिन पेंशन आज तक नहीं मिली। घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा। पेंशन की चिंता और भूख से उनकी मौत हो गई।

नारद –उनका परिवार के अलावा किसी और विषय से लगाव तो नहीं था?

भोलाराम की पत्नी –नहीं महाराज, ऐसा बिल्कुल नहीं था।

नारद -मेरा मतलब किसी और स्त्री...

भोलाराम की पत्नी –साधु जी, आप महात्मा हैं, चोर-उचक्के नहीं हैं। मेरे पति का इस परिवार के अलावा किसी से कोई लगाव नहीं था। वे तो किसी और औरत को आँख उठाकर भी नहीं देखते थे।

नारद –मेरा वो मतलब नहीं था।

भोलाराम की पत्नी --आप साधु महात्मा हैं। क्या आप हम लोगों के लिए उनकी पेंशन दिलवाने का काम कर सकते हैं?

नारद –मैं साधु आदमी हूँ। मेरी कौन बात सुनेगा?

भोलाराम की पत्नी –महाराज आजकल तो साधुओं की ही बातें सुनी जाती हैं।

नारद–ठीक है। मैं सरकारी दफ्तर जाकर भोलाराम की पेंशन के बारे में बात करता हूँ। नारायण, नारायण।

छठवाँ दृश्य – (पेंशन का दफ्तर, कई लोग कुर्सियों पर बैठे अपना काम कर रहे हैं।)

नारद – अरे भाई, पेंशन का दफ्तर यही है क्या?

चपरासी – हाँ साधु जी, लेकिन साधुओं को पेंशन नहीं मिलती है।

नारद – भाई मुझे पेंशन नहीं चाहिए। मुझे तो भोलाराम नाम के आदमी की पेंशन के बारे में कुछ बातें पूछनी हैं।

चपरासी – बाबा, यहाँ मुफ्त में कोई काम नहीं होता है।

नारद – भोलाराम की पेंशन के लिए मुझे किससे मिलना होगा? यही बता दो भाई।

चपरासी – आप सीधे बड़े साहब से मिल लीजिए। अगर उन्हें खुश कर दिया तो समझो कि आपका काम हो जाएगा।

नारद – ठीक है। नारायण, नारायण।

(नारद बड़े साहब के पास जाते हैं। बड़े साहब फोन पर किसी से बात कर रहे थे। नारद को देखकर नाराज होते हैं।)

बड़े साहब – अरे यह आदमी अंदर कैसे आ गया?

नारद – आपका दरवाजा खुला देखा, तो अंदर आ गया।

बड़े साहब – इसे क्या मंदिर समझ लिया है? सीधे अंदर चले आए।

नारद – मुझे आपसे भोलाराम की पेंशन के बारे में बात करनी है।

बड़े साहब – क्या आप उसके रिश्तेदार हैं?

नारद - नहीं, मैं उनका कोई नहीं हूँ।

बड़े साहब – तो आप इस पचड़े में क्यों फँस रहे हैं? भोलाराम ने अपनी फाइलों पर वजन नहीं रखा। इसलिए उसे पाँच साल से पेंशन नहीं मिली। आप वजन रख दीजिए तो पेंशन मिल जाएगी।

(नारद एक पेपर वेट उठाकर कागज पर रख देते हैं।)

बड़े साहब – अरे यह वाला वजन नहीं। रिश्वत, पैसे वाला वजन रखिए तो काम होगा। यह भी एक प्रकार का मंदिर ही है। यहाँ दान देंगे तो ही काम होगा।

नारद – मेरे पास तो पैसे नहीं हैं।

बड़े साहब – अरे कोई बात नहीं। (....) मेरी बेटी को संगीत का शौक है। उसके लिए यह वीणा दे दीजिए। इससे भी भोलाराम का काम हो जाएगा।

नारद – मेरे पास ले-देकर यही एक चीज है। सभी देवताओं के पास न जाने कितना कुछ होता है। और मेरे पास केवल यही एक चीज है। इसे भी आपको दे दूँ? ....चलो.. कोई बात...   नहीं। इसे आप ले लीजिए और भोलाराम की पेंशन का ऑर्डर निकलवा दीजिए।

बड़े साहब – ठीक है मैं फाइल मँगवाता हूँ।

(चपरासी के लिए बेल बजाता है।)

चपरासी – आपने बुलाया?

बड़े साहब – जरा भोलराम की फाइल लेकर आओ।

(चपरासी फाइल लेकर आता है।)

बड़े साहब – भोलाराम नाम बताया था न आपने?

नारद – हाँ-हाँ, भोला...राम।

भोलाराम का जीव – कौन पुकार रहा है मुझे? डाकिया है क्या? मेरी पेंशन का ऑर्डर आ गया है क्या?

नारद – अरे...तुम भोलाराम के जीव हो क्या?

भोलाराम का जीव – हाँ, मैं भोलाराम का जीव हूँ।

नारद – मैं नारद हूँ। तुम्हें स्वर्गलोक ले जाने आया हूँ। चलो वहाँ तुम्हारा इंतज़ार हो रहा है।

भोलाराम का जीव – मुझे कहीं नहीं जाना है। मैं अपनी पेंशन की फाइल छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा।

समाप्त